International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-11-2019; Accepted: 27-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 76-77

प्रभा खेतान की रचना सृष्टि और विचार धारा

सुलेखा मिश्रा
शोधार्थी–हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
बीसवीं सदी के अंतिम दशक में स्त्री विमर्श को लेकर उपन्यासों का सृजन करने वाली प्रभा खेतान एक श्रेष्ठ महिला उपन्यासकार हैं। उनके अधिकतर उपन्यास जीवन में आए अनुभवों की अभिव्यक्ति है। उन्होंने अपने जीवन में जो देखा, जो भोगा, जो महसूस किया, उसे कलम के माध्यम से सफल रूप में उपन्यास साहित्य में उतारना चाहा है। हिन्दी उपन्यासों में अनेक लेखिकाओं ने अपने साहसपूर्ण मौलिक चिंतन के साथ जीवन की विषमताओं को अपनी दृष्टि से विश्लेषित किया है।

मूल शब्दः स्त्री, उपन्यासों, खेतान, मौलिक, नारीवादी

प्रस्तावना

नारीवादी चिंतक प्रभा खेतान एक सफल उद्योजक के तौर पर गौरान्वित हुई है। व्यापार जगत की अनेक ऊंचाईयों को छूने वाली प्रभा जी की साहित्यिक साधना भी अपने आप में श्रेष्ठ रही है। बचपन के 12 वर्ष की उम्र से लेकर अब तक के अपने संपूर्ण जीवनकाल में प्रभा खेतान ने सृजन किया है। कविता के माध्यम से अपनी साहित्यिक यात्रा की शुरुआत करने वाली प्रभा खेतान ने उपन्यास, कहानी, अनुवाद, संपादन, चिंतन परख ग्रंथ, आत्मकथा आदि साहित्यिक विधाओं से होते हुए अग्रसर हुई है। प्रभा खेतान को जितनी सफलता उपन्यास विधा में मिली उतनी अन्य किसी विधा से नहीं मिली। आज भूमंडलीकरण के दौर में साहित्यिक समाज में अपने प्रभावी नारीवादी विमर्श के कारण केंद्रीय स्थान प्राप्त करने वाली लेखिका प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री से संबंधित यथार्थवादी दृष्टि और अस्तित्ववादी सोच के दर्शन होते हैं। प्रभा खेतान का यह दृष्टिकोण गहन अध्ययन और चिंतन से बना है। क्योंकि प्रभा खेतान अस्तित्ववादी, दार्शनिक, ज्यापॉल सार्त्र और स्त्रीवादी चिंतक सीमोन द बोउवार के विचारों से प्रभावित रही है। इस संदर्भ में वह स्वयं लिखती हैं कि–''मैने सार्त्र पर शोध किया था, इसलिए उनकी प्रेमिका उनकी जीवनमित्र को भी पढ़ा। सीमोन को पढ़ने से नारीवादी विचारधारा चिंतन और जीवन मूल्यों के प्रति मेरा आग्रह बढ़ता गया।''1 प्रभा खेतान ने इन महान विचारकों के सिद्धांतों का गहन अध्ययन कर विशेषतः सार्त्र के दर्शन पर अस्तित्ववाद से संबंधित दो किताबों का निर्माण किया है। सार्त्र और अल्बेयर कामू के सिद्धांतों और विचारों में भारतीय जनमानस का परिचित करवाया है। इतना ही नहीं सिमोन की 'सेकण्ड सेक्स' का हिन्दी में अनुवाद कर स्त्री–मुक्ति के आंदोलन को प्रभावशाली बनाया है। वैसे प्रभा खेतान के साहित्य की मूल विचारधारा दर्शन से जुड़ी है, इसलिए उनके साहित्य को दर्शन से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। प्रभा खेतान मानती है कि पुरुष व्यवस्था ने स्त्री को हमेशा हीनभाव से देखा उसके प्रति कभी उदारभाव नहीं रखे। पुरुष का मूल्यबोध और उसका दमन कार्य इसलिए चलता रहा कि उसने स्वयं को व्यक्ति विचार और व्यवस्था का प्रतीक माना और स्त्री को वस्तु मानता रहा। लेकिन अपनी दैहिकता में कैद स्त्री ने अपने लेखन से पहली बार पुरुष व्यवस्था को नकारा तथा सत्ता द्वारा आरोपित भूमिकाओं के प्रति सवाल उठाकर स्वयं को वस्तु से व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है।

इसलिए रोजमर्रा की जिंदगी निजी घटनाओं का सटीक वर्णन जितना प्रभा खेतान के लेखन में मिलता है, उतना किसी पुरुष लेखन में नहीं प्राप्त होता। इस संदर्भ में प्रभा जी स्वयं लिखती है कि– ''व्यवस्था से मुक्ति की चाहना को अपने लेखन में जितनी शिद्दत से वह महसूस करती है या जितनी गहराई से तन्मय होकर अपने उत्पीड़न और शोषण को वह अभिव्यक्त कर पाती है, उतना पुरुष लेखन द्वारा संभव नहीं।''2 अपने साहित्य में बहुत सोच–समझकर स्त्रीवादी विषयों का चयन करती हैं। वह अपने लेखन से स्त्री को न्याय और स्वतंत्रता देना चाहती हैं। इसलिए उनकी हर कविता हर उपन्यास हर यात्रा–वृत्तांत के केन्द्र में हमें स्त्री ही नजर आती है। वास्तव में उनके लेखन में स्त्री अपने अस्तित्व की स्थापना करते हुए नजर आती है। यह उनकी अस्तित्ववादी सोच का ही परिपाक है। उनके अस्तित्ववादी रचना दृष्टिकोण को लेकर डॉ. उषाकीर्ति राणावत लिखती है ''प्रभा जी स्वयं अस्तित्ववाद में गहरे पैठ कर हताशा, निराशा और विसंगतियों के बीच अपने अस्तित्व रूपी मोती को चुनकर ले आती है उनके कथा साहित्य में इसकी छाप देखते ही बनती है।''3 उपन्यास साहित्य में चित्रित समस्त स्त्री और पुरुष पात्र अपने अस्तित्व की पहचान बनाने के लिए युद्ध स्तर पर क्रियाशील दिखाई देते हैं। स्त्री–पुरुष के वर्ग भेद को मिटाने के लिए आर्थिक स्वावलंबन के महत्व को प्रभा खेतान ने स्वीकार किया है। इसलिए उनके साहित्य में समस्त स्त्री पात्र अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता से जीने की पहली शर्त मानते हैं। स्त्री सशक्तिकरण के लिए स्त्री का आर्थिक स्वाबलंबन बहुत जरूरी समझती हैं। स्त्री आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी रही तो उस पर जुल्म नहीं होंगे, यदि हुए भी तो कम मात्रा में होंगे।

स्वावलंबी होने से औरत का स्वाभिमान और आत्मसम्मान बढ़ता है। साथ ही वह प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिबंधों को नकारने की क्षमता हासिल करती है। प्रभा खेतान अपने लेखन के माध्यम से स्त्री को पुरुष के समान महत्व दिलाना चाहती हैं। उनका मार्क्सवादी दृष्टिकोण स्त्री, पुरुष में समानता स्थापित कर रामराज की कल्पना को साकार करते हुए नजर आता है। जितनी आजादी पुरुष व्यवस्था ने पुरुष को दी है, उतनी ही आजादी स्त्री को भी दिलाना चाहती हैं। अतः अपने उपन्यास साहित्य को निर्मित करते समय विशेषतः मारवाड़ी समाज और उसके बनते–बिगड़ते सामाजिक जीवन को ध्यान में रखना चाहा है। अपने आप में सम्पन्न समझा जाने वाला मारवाड़ी समाज होने वाले परिवर्तनों से किस तरह पीड़ित है। तथा उनके जीवन में

किस तरह का परिवर्तन आया है। इन समस्त बातों पर अपने नारी पात्रों के माध्यम से विचार किया है। नारी केन्द्रित साहित्य के माध्यम से नारी अस्मिता, समाज व परिवार में नारी की भूमिका, स्त्री–पुरुष संबंध, नारी शोषण, नारी व अर्थ तंत्र तथा नारी की बदलती मानसिकता जैसे– महत्वपूर्ण मुद्दों को स्थान दे, एक नया आयाम स्थापित करना चाहती है। नारी केन्द्रित उपन्यास साहित्य को लेकर गोपाल राय लिखते हैं– 'आओ पेपे घर चलें' के बाद प्रभा खेतान के तालाबंदी, छिन्नमस्ता, अपने–अपने चेहरे, पीली आंधी, अन्या से अनन्या, आदि उपन्यास प्रकाशित हुए। समग्र रूप में देखें तो स्त्री प्रभा खेतान की चिंतन और संवेदना के केन्द्र में है।''4 स्त्रीवादी चिंतक प्रभा खेतान विशेषतः स्त्री विमर्श की बात करती हैं। इसलिए उनके साहित्य की प्रत्येक विधा में हमें नारी की उपस्थिति ज्ञात होती है। प्रभा खेतान देश–विदेश की नारी की भूमिका को साहित्य के माध्यम से पाठकों के सामने रहना चाहती हैं।

उनके समस्त उपन्यासों में हमें नारी ही केन्द्र में दिखाई देती है। अपने नारी केन्द्रित साहित्य के संदर्भ में वह स्वयं लिखती हैं– ''मेरी हर कविता, हर उपन्यास, हर यात्रा वृत्तांत के केन्द्र में स्त्री है। मैं दुनिया के जिस किसी कोने में गई हूं, मैने स्त्री को खोजा है। उसे जानने की चेष्टा की है। उस देश की स्त्री कैसी है? वह कैसे कपड़े पहनती है? उसकी सामाजिक भूमिका का कितना महत्व है? क्या स्त्री अधिकारों के प्रति सजग है? क्या उसके देश में भी स्त्री मुक्ति की गुहार लगायी जा रही है? क्या वहां की लेखिकाएं वहां की विशिष्ट बुद्धिजीवी महिलाएं स्त्री का प्रतिनिधित्व करने की चेष्टा करती है? अतः मेरे लेखन में व्यक्तिगत और सामाजिक वस्तु और विचार सब गड्मगड्ड रहे हैं। मेरे अनुभवों पर आधारित मेरा लेखन, मेरा मूल्यबोध, मेरा व्यक्तिगत इतिहास, इस 'कॉज' के प्रति समर्पित रहा।''5 सदियों से स्त्री के संदर्भ में कुछ आदर्शवादी बातें कही जा रही हैं उसे देवी कहा जा रहा है। यह आदर्शवादी बातें हो गई। लेकिन क्या कभी किसी ने उससे पूछा कि उसके भीतर सदियों से कौन–सा लावा खौल रहा है? एक ही धुरी पर निरंतर घूमती हुई स्त्री के मन में क्या खुले आकाश में विचरने की चाहत कभी पैदा नहीं हुई। लेकिन आदर्श की बातें करने वाले इस पुरुष समाज ने हमेशा स्त्री के अतःकरण की अवज्ञा की है। प्रभा खेतान अपनी पात्रों को इन आदर्शों को थोड़ा स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होने की सलाह देती है। क्योंकि प्रभा मानती है कि– ''खुद कमाए हुए धन से उसे जो सुरक्षा आत्मबल और स्वतंत्रता हासिल होती है वह अन्य किसी के द्वारा दिए हुए धन से नहीं मिल सकी।''6

निष्कर्ष

प्रभा खेतान के उपन्यासों की रचना सहज एवं वास्तविक धरातल पर हुई है। अपने व्यक्तित्व ठोस अनुभवों की वास्तविकता के चलते उनके उपन्यासों का कथानक सजीव बन पड़ा है। उनके उपन्यासों की सजीवता को प्रबल बनाने के लिए ऐसे में साथ दिया है उनके नारी पात्रों की भाषा ने जहां एक तरफ प्रभा खेतान के उपन्यासों में शोषित, दमित, पीड़ित, अतिश्रमित रूप मिलता है वहीं इन सबके बावजूद कुछ ऐसी तेज तर्रार जुझारू और संघर्षशील नारियां भी दिखाई देती है। नारी पात्र परंपरा को नकार कर आधुनिकता का स्वागत करते हैं। वे प्रगतिशीलता के पग बढ़ाते हुए रूढ़ियों को तोड़ अपेन अंदर के भय तथा संदेह को दबाकर विद्रोह की अभिव्यक्ति द्वारा पुरुष दंभ और मिथ्या अहंकार को तोड़ती हुई नजर आती है।

संदर्भ सूची

1. उपनिवेश में स्त्री– प्रभा खेतान, पृ. 57
2. उपनिवेश में स्त्री– प्रभा खेतान, पृ. 50
3. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ. राणावत, पृ. 153
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपालराय, पृ. 387
5. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपालराय, पृ. 387
6. आउटलुक साप्ताहिक, 20 सितम्बन 2004, पृ. 60